कलीसिया अध्याय 8

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* 1 कुरिन्थियों 9-12

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (1 कुरिन्थियों 9-12) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। नोट्स बनाएं।

3.	**याद करना** (5 मिनट) [*यूहन्ना में कुँजी वचन*] (2) यूहन्ना 1:16

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(2) यूहन्ना :1:16. क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* यूहन्ना 2:1-25

परिचय। यूहन्ना 2:1-11 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाच कदमों का इस्तेमाल करें। यूहन्ना 2:1-11 में दर्शाया गया है कि यीशु ने अपने आप को प्रारम्भिक चेलो पर प्रगट किया। यूहन्ना 2:12-25 में दिखाया गया है कि यीशु मसीह अपने आप को यरूशलेम में रहने वाले लोगों पर प्रगट करता है।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये मिलकर यूहन्ना 2:1-25 पढ़ें।

आइये हम एक एक वचन करके तब तक पढ़ते रहे जब तक कि अनुच्छेद समाप्त नहीं हो जाता।

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। एक या दो मुख्य बातें आपको समझ में आयी हों उन्हें आप लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपनी कॉपी में उसे लिखें।

साझा करें।(जब समूह के सभी जन 2 मिनट तक सोच कर लिख चुकें हो,तो अपनी बात दूसरों के सामने रखें।

आइये अब हम आपस में साझा करें कि हमने इस अनुच्छेद से क्या सीखा। (**याद रखें:** हर एक छोटे समूह में,समूह के लोग अलग अलग बातों को साझा करेंगे)

2:11

***खोज* 1 . यीशु ने अद्भुत चमत्कार के द्वारा अपनी महिमा को प्रगट किया।**

प्रभु यीशु मसीह की महिमा वे सारे ईश्वरीय गुण हैं जो उसके मानवीय स्वभाव के पर्दे से होकर चमक रहे हैं। उसकी महिमा का एक उदारहण उसका अनुग्रह और प्रेम है। यूहन्ना 1:14-18 में यूहन्ना कहत है,"हमने उसकी महिता को देखा.... जो उसके अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण थी।" उसकी महिमा को देखने का अर्थ उसके ईश्वरीय गुणों का मूल्यांकन व उस पर चिन्तन करना है। यहां पर उसकी महिमा उसके अनुग्रह और सत्य है जो उसके कामों और उसकी बातों से प्रगट होती है।

उसकी महिमा के प्रगट होने का एक और उदारहण उसके अद्भुत चमत्कार है। यूहन्ना 2:11 में यीशु ने एक अद्भुत चमत्कार के द्वारा अपनी महिमा को प्रगट किया। उसने विवाह उत्सव में पानी को दाखरस में बदल कर अपने ईश्वरीय गुणों को प्रगट किया। यहां पर यीशु की महिमा निम्नलिखित बातों में समाई हुई है। उसने विवाह का आदर करके उसने अपने सिद्ध नैतिक मूल्यों को प्रगट किया। उसने बहुतायात से दाखरस का इन्तेजाम करके अपनी ईश्वरीय उदारता प्रगट किया और परेशान घर के स्वामी की सहायता की।

मैं और अधिक गहराई व सावधानी के साथ पुराने और नये नियम में प्रगट ही गयी मसीह की महिमा के विषय में देखना चाहूँगा।

2:24-25

खोज 2.यीशु ने खुद को दूसरों के भरोसे न रहें और न अपने कामों को छोड़ा।

जब यरूशलेम के लोगों ने यीशु द्वारा किये गये अद्भुत चमत्कारों को देखा तो, बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया(2:23)। लेकिन यीशु ने कभी अपने आपको उनके भरोसे नहीं सौंपा अर्थात वे उन पर कभी निर्भर नहीं हुए,क्योंकि वे उन्हें जानते थे। इसका मतलब यह है कि यीशु ने उन विश्वास करने वाले लोगों को सच्चे विश्वासी के रूप में नहीं पाया। केवल यीशु ही सब लोगों को जानता है। केवल यीशु ही जानता है कि लोगों के हृदय में क्या है। केवल यीशु ही जानते है कि कब कोई व्यक्ति सही मायने में नया जन्म पाता है। यूहन्ना 2:25 में लिखा है कि यीशु को किसी भी व्यक्ति के बारे में किसी दूसरे जन से गवाही या साक्षी सुनने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उसकी आर पार देखने वाली आखें मनुष्य के हृदय को परखकर सारा हाल जान सकती हैं।

यूहन्ना अध्याय 1 में, जब यीशु ने पहली बार शिमौन को देखा, तो उसे किसी से यह सुनने की जरूरत नहीं पड़ी कि शिमौन कौन था। उसकी आर पार देखने वाली आंखों ने स्वयं पहिचान लिया कि शिमौन कौन था। जब यीशु ने पहली बार नतेनयेल को देखा तब कि उसे किसी व्यक्ति से यह जानने की जरूरत नहीं पड़ी कि वह कौन हे। वह जानता था कि नतेनयेल एक सच्चा यहूदी है जिसके मन में कोई कपट नहीं था। अत: यीशु यूहन्ना अध्याय 2 में अच्छी तरह से जानते थे कि यरूशलेम वासियों में से बहुतों कि विश्वास सच्चा व उद्धार करने वाला विश्वास नहीं था।

अन्त:करण के भीतर झांकर देखने वाली उसकी आखों से वह सब लोगों के मन का हाल जान लेता है। वह उनके विचारों,उद्देश्यों और व्यवहार को जानता था। और यूहन्ना 3 में, यीशु जब पहली बार नीकेदुमुस से मिला तो उसे उसके बारे में बताने के लिए किसी की जरूरत नहीं पड़ी।

ये सारी आयते मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि मैं इस बात को मानता हूँ कि यीशु मेरे बारे में सब कुछ जानते हैं। उसकी आर पार देखने वाली आंखे मेरे मन,मस्तिष्क और मेरे जीवन में देखने के योग्य हैं(2 कुरि 16:9;इब्रानियों 4:13)। वह पतरस की कमजोरियों को जानता है, वह नतेनयेल की ईमानदारी को जानता है, वह सारे लोगों के विश्वास के समान मेरे विश्वास की दशा को भी जानता है और वह नीकेदुमुस के प्रश्नों के समान मेरे मन में उठने वाले प्रश्नों को भी जानता है।

कदम 3. प्रश्न. **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आइये हम यूहन्ना 2:1-25 में पाये जाने वाले सत्य को जानने का प्रयास करें और उन चीज़ों के बारे में प्रश्नों को पूछे जिन्हें हम अभी नहीं समझते।
लेखा। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव स्पष्ट हो सके बनाएं। फिर अपने प्रश्नों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सभी जन 2 मिनट तक सोच कर लिख चुकें हो,तो अपनी बात दूसरों के सामने रखें।
आइये अब हम आपस में साझा करें कि हमने इस अनुच्छेद से क्या सीखा।)
चर्चा करें। (तब, कुछ प्रश्नों का चुनाव करें और अपने समूह के सदस्यों के साथ मिलकर इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें।
(निम्नलिखित कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर विद्यार्थी गण आपस में पूछ सकते हैं और प्रश्नों से सम्बन्धित कुछ टिप्पणियां हैं जिन पर वे चर्चा कर सकते हैं)

2:11

प्रश्न 1. बाइबल में चमत्कारों का क्या उददेश्य है?

नोट्स।

यूहन्ना "चमत्कारों" की बजाये "चिन्ह" शब्द का इस्तेमाल करना पसन्द करता है

(1) चिन्ह एक चमत्कार ही है जिसे ईश्वरीय अधिकार व प्रताप के रूप में देखा जाता है।

चमत्कार का उददेश्य दर्शकों के ध्यान को चमत्कार से हटाकर चमत्कार करने वाले परमेश्वर की ओर आकर्षित करना है। बाइबल में चमत्कार विशेष तौर पर उन जगहों पर होते हुए नजर आते हैं जहां पर किसी नये प्रकाशन का उदय होता है।

- मूसा : जब परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था को प्रगट किया, तब ही परमेश्वर ने उसके द्वारा चिन्हों को भी प्रदर्शित किया। उसने उसके शत्रु के खिलाफ दस विपत्तियां भेजी। उसने लाल समुद्र के पानी को इस्राएलियों के लिए दो भागों में बांट दिया ताकि वे सूखे में समुद्र पर कर सकें। उसने खारे पानी को मीठा कर दिया, इत्यादि। इन चमत्कारों के द्वारा परमेश्वर ने यह साबित किया कि जो भी व्यवस्था मूसा को दी गयी हैं वह परमेश्वर द्वारा प्रेरित व अधिकृत है।
- एलिय्याह और एलीशा: उन दिनों में जब यहूदा और इस्राएल दोनों परमेश्वर से फिर गये थे परमेश्वर ने अपनी वास्तविकता उन पर प्रगट की,परमेश्वर ने अपने दासों एलिय्याह और एलीशा के द्वारा अनेकों चिन्ह दिखाए। उसने एक गरीब विधवा के लिए भोजन का इन्तेजाम किया। उसने वेदी पर रखे बलिदान, चारों तरफ डले पानी और पत्थरों तक को जलाकर भस्म करने के लिए आग को भेजा ताकि यह साबित हो सके कि मूर्तियों में कोई शक्ति नहीं है। उसने मृतक बालक को जीवित कर दिया। उसने अग्निमय रखा की सुरक्षा देकर अपने दासों की सुरक्षा की।
- यीशु मसीह। जब परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर मानवीय स्वभाव का धारण किया और हमारे बीच में आकर डेरा किया, तब उसने ज्यादातर और सर्वश्रेष्ठ चमत्कारों को अन्जाम दिया। उसने बीमारों को चंगा किया। उसने दुष्टात्मा ग्रसित लोगों को छुटकारा दिया। उसने बन्धुओं को आजाद कराया। उसने अन्धों को आंखें दी। लंगड़ा फिर से चलने लगा। कोढ़ी चंगे हो गये,बहरे सुनने लगे। मृतकों ने फिर से जीवन पाया। उसने हजारों की भीड़ को चमत्कारी ढंग से भोजन कराया और समुद्र में आये तूफान को शान्त कर दिया। लेकिन उससे भी बड़ें चमत्कार निम्नलिखित हैं:
  -कुंवारी से जन्म लिया।पवित्र आत्मा ने अपने मानवीय स्वभाव का कुवारी मरियम से पैदा होना सम्भव किया।
  -मृतकों में से उसका जी उठना। क्रूस पर मारे जाने के बाद वह मृतकों में से जी उठा और फिर कभी नहीं मरेगा।
  -उसका स्वर्गारोहरण। वह सबके देखते हुए स्वर्ग पर उठा लिया गया और तब से लेकर अब तक अनगिनत लोगों को पापों, मृत्यु और अनन्त विनाश से बचाने का सिलसिला नहीं रुका है।
  -लोगों को अनन्त उद्धार व रूपान्तरणं। उसने अपने लोगों को रूपान्तरित करके उन्हें परमेश्वर के राज्य का नागरिक बना दिया।

- यीशु के प्रेरित। जब परमेश्वर ने हर जगह अपने कार्यों और प्रेरितों के लेखों द्वारा अपनी कलीसिया की स्थापना की,उसने प्रेरितों के द्वारा बहुत से चमत्कारों को प्रगट किया। उन्होंने भी बीमारों को चंगा किया,दुष्टात्मा से ग्रसित लोगों को छुटकारा दिया, अन्धों और विकलांग लोगों को चंगाई प्रदान की और मुर्दो को ज़िन्दा किया। लेंकिन सबसे महत्वपूर्ण (क्योंकि उपरोक्त चमत्कार तो अस्थायी थे) बात यह है कि यीशु ने उन्हें जगत के छोर तक सुसमाचार

सुनाने के लिए, बहुतों के जीवन को रूपान्तरित करने के लिए,यहूदियों, सामरियों और अन्यजातियों के बीच में मण्डली स्थापित करने के लिए तथा बाइबल की अन्तिम पुस्तकों को लिखने के लिए इस्तेमाल किया।

(2) चिन्ह शारीरिक क्षेत्र में शक्ति का काम है जो उस मुख्य सच्चाई या प्रकाशन का वर्णन करता है जो आत्मिक क्षेत्र में लागू होती है।

किसी भी चमत्कार का एक विशेष उददेश्य होता है। जो चिन्ह या चमत्कार सृष्टि के शारीरिक क्षेत्र में होता है वह अपने आप से हमारा ध्यान हटाकर उस चमत्कार की ओर इशारा करता है जो आत्मिक छुटकारे के क्षेत्र में घटित हुआ होता है। उदाहरण के लिए:

- यूहन्ना 6:14 में, रोटी का गुणन या अनेकों रोटियों में तबदील हो जाने के पीछ उद्देश्य लोगों के ध्यान को जीवन की रोटी की ओर अर्थात यीशु मसीह की ओर खींचना था(यूहन्ना 6:35),जो विश्वास करने वालों को अनन्त जीवन प्रदान करता है।
- यूहन्ना 9:16 में, जन्म के अन्धे को आंखो की ज्योति प्रदान करने का चमत्कार लोगों को यह दर्शाने के लिए किया गया कि यीशु जगत की ज्योति है(यूहन्ना 8:12), जो विश्वास करने वाले लोगों को आत्मिक ज्योति प्रदान करता है।
- यूहन्ना 11:47 और 12:18 में लाज़र को मुर्दों में से जिन्दा करने का चमत्कार लोगों को यह बताने के लिए था कि यीशु ही *पुनरूत्थान और जीवन है*(यूहन्ना 11:25), जो विश्वासियों को नया आत्मिक जीवन और उनकी मरणहार देह हो रूपान्तरित करके पुनरूत्थान के दिन अपनी देह के समान स्वर्गीय देह प्रदान करेगा(फिलिप्पियों 3:21)।

केवल उस चिन्ह का सन्दर्भ ही प्रगट करेगा कि उस चमत्कार में दूसरा आत्मिक मतलब छुपा है या नहीं। हर मामले में, एक चिन्ह, हमेशा ध्यान अपने ऊपर से हटाकर चमत्कार करने वाले की ओर खींचता है। यूहन्ना 2:11 में, किये गये चमत्कार को यीशु द्वारा किया गया प्रथम चमत्कार कहा जाता है। यीशु द्वारा किये गये चमत्कार लोगों को यह दिखाने के लिए के लिए किया गये थे कि यीशु इस संसार में पुरानी व्यवस्था को पूरा करने और उसके स्थान पर नये नियमों को देने के लिए आया है(यूहन्ना 2:19-21;मत्ती 5:17)। यीशु मसीह के प्रथम आगमन ने पुरानी व्यवस्था को समाप्त कर दिया(मन्दिर,याजक,बलिदान और ईशकेन्द्रित देशों के महत्व को) और उसे नये नियम से परिवर्तित कर दिया(अर्थात आत्मा और सच्चाई में होकर परमेश्वर की आराधना करना, प्रायश्चित के लिए केवल एक ही बलिदान,सारे राष्ट्रों से आने वाले परमेश्वर के लोग इत्यादि)जिस प्रकार से दाखरस पानी से उत्तम है उसी प्रकार से नया नियम पुरानी व्यवस्था से उत्तम है!

(3) प्रगट किया गया चमत्कार विश्वास को पैदा नहीं करता वरन वह विश्वास को मज़बूत करता है।

मूल यूनानी भाषा में यूहन्ना 20:30-31 में लिखा है कि,"कि इन चमत्कारों के बारे में इसलिए लिखा गया है कि तुम लगातार विश्वास करते रहो" (अर्थात वर्तमान अपूर्ण काल) कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है"। वहां पर यह नहीं लिखा गया हैं कि,"तुम विश्वास करना प्रारम्भ कर दो", वरन "तुम लगातार विश्वास करते रहो"। केवल पवित्र आत्मा ही लोगों में वचन के सुनने के द्वारा (रोमियों 10:17)विश्वास उत्पन्न करता है(फिलिप्पियों 1:29)। चिन्ह के रूप में प्रगट किये गये चमत्कार का उददेश्य विश्वास पैदा करना नहीं, वरन सच्चे अर्थात उद्धारकरने वाले विश्वास को मज़बूत करता है। केवल पवित्र आत्मा विश्वास उत्पन्न करता है और इन चमत्कारों से जुड़ी शिक्षाएं विश्वास को शक्ति प्रदान करती हैं। प्रेरित यूहन्ना ने शत्रुओं और झूठे भविष्यद्वक्ता की मौजूदगी में विश्वासियों के विश्वास को मज़बूत करने के लिए यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखा।

2:14-17

प्रश्न 2 यीशु ने मन्दिर को साफ क्यों किया?

नोट्स।

सभी यहूदियों के लिए प्रतिवर्ष यरूशलेम में फसह का पर्व मनाना(निर्गमन 23:14-17) और मन्दिर का कर चुकाना(निर्गमन 30:11-16) अनिवार्य थ। फसह के सात दिनों के दौरान परमेश्वर के लिए बहुत से जानवरों को बलि करके चढ़ा दिया जाता था(गिनती 28:16-25)। बहुत से यहूदी दूर देशों से आया करते थे इसलिए उन्हें अपने बलिदान के लिए जानवर यरूशलेम से खरीदने पड़ते थे। हनन्याह नामक, सिन्हेद्रिन का एक दुष्ट अधिकारी इन परिस्थितियों का फायदा उठाना चाहता था। इस कारण उसने बिक्री करने वालों और सर्राफों को यह अनुमति दी कि वे मन्दिर के बाहरी आंगन का इस्तेमाल कर सकते हैं,जो अन्यजातियों के लिए आंगन भी कहलाता था। जिसके परिणाम स्वरूप जानवरों और भेड़ों के सौदागर लालच में आकर जानवरों के ऊंचे दाम लगाया करते और अराधकों को लूटते थे।

इसके अलावा सर्राफों ने भी मन्दिर के इस आंगन का इस्तेमाल व्यवसाय के लिए इस्तेमाल किया। हर एक पुरूष अराधक को आधे शेकेल प्रतिवर्ष के हिसाब से वार्षिक शुल्क अदा करना होता था। अत: जो यहूदी दूसरे देशों में रहते थे उन्हें यहूदी मुद्रा प्राप्त करने के लिए विदेशी धन को बदलना पड़ता था। अत: यह तो स्वाभाविक था कि वे हर बार मुद्रा बदलने के शुल्क के रूप में उनसे पैसे कमाते थे। यहां पर भी धोखे और शोषण के बहुत से अवसर उपलब्ध थे।
अत: जब यीशु मन्दिर में आया तो उसने मन्दिर के बाहरी आंगन में लोगों को जानवर,भेड़े, कबूतर आदि बेचते हुए तथा सर्राफों को अपनी अपनी चौकियों पर बैठे हुए देखा। इस तरह से मन्दिर, अर्थात वह स्थान जिसे लोगों के प्रार्थना करने के लिए बनाया गया था, एक ऐसा बाजार बन गया जहां पर लोगों को रोज़ लूटा जा रहा था।

(1) यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने के नाते मन्दिर को साफ कर दिया।

यीशु ने मन्दिर को "मेरे पिता का घर" कहा (लूका 2:49)। मन्दिर को साफ करने के द्वारा उसने परमेश्वर पिता के इकलौते पुत्र होने के अधिकार का इस्तेमाल किया(इब्रानियों 3:1-6)जिससे उसके पिता का घर पवित्र रहें और वह अपनी मूल अवस्था में अर्थात आराधना के घर के रूप में बहाल हो सके।

(2) यीशु ने मसीह के रूप में मन्दिर को शुद्ध किया।

यहूदी खुद अपनी बाइबल को नहीं जानते थे। हजारों वर्ष पहले राजा दाऊद ने भविष्यद्वाणी की थी," मेरे पिता की धुन ने मुझे खा लिया है"(भजन 69:9)। मन्दिर की सफाई ने कुछ तरीकों से यीशु की मृत्यु में सहयोग प्रदान किया। भविष्यद्वक्ता मीका ने भविष्यद्वाणी की थी कि प्रभु (विश्वासी जिसकी खोज में थे)(अर्थात मसीह) अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा। वह "वाचा का दूत कहलाया"(इब्रानी: मालाक हा-बेरित)। वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान होगा,वह लेवियों के गोत्र के लोगों को शुद्ध करेगा(मलाकी 3:1-3)! इस तरह, पुराना नियम पहले ही साबित करता है कि मसीह को मन्दिर शुद्ध करने का अधिकार है। जब यीशु ने मन्दिर को साफ करना शुरू किया तब उसके चेलों को याद आया कि ये भविष्यद्वाणियां पुराने नियम में मसीह के बारे में लिखी हुई हैं।

यीशु मसीह ने मन्दिर को साफ करने के लिए अपनी ताकत का इस्तेमाल किया, क्योंकि उसके पास पिता के इकलौते पुत्र व मसीह होने के नाते किसी को दण्ड देने का वह हक(अधिकार)था।(यूहन्ना 5:22)

2:18-22

प्रश्न 3.यीशु द्वारा कहे इस वाक्य का क्या अर्थ है कि,"इस मन्दिर को ढा दो और मैं इसे पुन: तीन दिनों में बनाकर खड़ा कर दूँगा।"?

नोट्स।

(1) यीशु की पहेली।

यीशु ने कहा "इस मन्दिर को ढा दो और मैं इसे पुन: तीन दिनों में बनाकर खड़ा कर दूँगा।" यह एक प्रकार की पहेली थी, क्योंकि इन शब्दों का दोहरा मतलब था। मन्दिर का अर्थ उस मन्दिर से हो सकता था तो पत्थरों से यरूशलेम में बना मन्दिर था, या फिर इसका मतलब देह रूपी मन्दिर हो सकता था। ढा देने शब्द का अर्थ मन्दिर की इमारत को गिरा देने से या फिर इसे यीशु के देह के नाश करना लगाया जा सकता है। और शब्द "खड़ा कर दूंगा" का अर्थ इमारत के पुन: बनाया जाना भी हो सकता है और इसका मतलब देह का पुनरूत्थान भी हो सकता है।

(2) इस पहेली का अर्थ।

यीशु का इस पहेली से यह मतलब था। हालांकि यहूदी लोग मिलकर मसीह की देह को नाश कर देगें, लेकिन तीन दिन में वह पुन: जीवित हो जाएगा। मसीह की देह रूपी मन्दिर को तोड़ने के द्वारा,यहूदी लोग पत्थरों से बने अपने मन्दिर और उससे जुड़ी सारी रीतियों को भी नाश कर रहे हैं।
फिर भी, उसकी देह रूपी मन्दिर के पुनरूत्थान के परिणामस्वरूप, यीशु मसीह एक नये आत्मिक मन्दिर का निर्माण करेगा जिसमें नये तरीकों का इस्तेमाल किया जाएगा, जिसमें लोग आत्मा और सच्चाई के साथ परमेश्वर की आराधना करेगें(2 कुरिन्थियों 6:16; इफिसियों 2:22; 1 पतरस 2:4-5)।"मसीह परमेश्वर के भवन में उसके पुत्र के रूप में विश्वासयोग्य है। और हम उसका घर है....." (इब्रानियों 3:6)।

(3) दृष्टान्त और उसकी परिपूर्णता को बाइबल में एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

दृष्टान्त के रूप में इस्राएल के तम्बू को या मन्दिर की इमारत को लिया गया है, जिसे उस स्थान के रूप में माना जाता था जिसमें परमेश्वर का वास होता था। (निर्गमन 25:22)। उसकी परिपूर्ण मसीह की देह है, जिसमें हर तरीके से परमेश्वर ने वास किया। कुलुस्सियों 2:9 में लिखा है, "क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।"
इसलिए जो कोई मसीह की देह को नाश करता है वह अपने आप यरूशलेम मे बंने परमेश्वर के मन्दिर को उसे अनुष्ठानिक नियमों के साथ नाश करता है।

- जब यहूदियों और रोमियों ने मिलकर यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया, मन्दिर की इमारत और उसके आनुष्ठानिक गतिविधियों की मान्यता खत्म हो गयी। मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो भागों में फट गया।(मत्ती 27:51)
- स्तीफनुस और पौलुस ने स्पष्ट रूप से सिखाय कि अब मन्दिर की इमारत का कोई मायना नहीं रहा(प्रेरितों 7:48-49;17:24-25)।
- इब्रानियों की पत्री भी हमें शिक्षा देती है कि मन्दिर व उसकी आनुष्ठानिक क्रियाएं यीशु व उसके उद्धार के पूर्ण कार्यो से प्रतिस्थाापित हो गयी हैं।
- कुछ ही समय के बाद अर्थात 70 ई.प.,टाइटस के राज्य में रोमियों ने यरूशलेम के मन्दिर को पूरी तरह से नाश कर दिया।

ठीक इसी तरह से यीशु मसीह का पुनरूत्थान नये मन्दिर की पुन:स्थापना को दर्शाता है (नये नियम की कलीसिया), "दूसरा मन्दिर जो मनुष्यो द्वारा बनाया हुआ नहीं है"(मरकुस 14:58), जहां पर लोग "आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करते हैं (यूहन्ना 4:23-24)। नये नियम हमें सिखाता है की मसीह की देह या कलीसिया परमेश्वर का आत्मिक मन्दिर है"(1कुरिन्थियों 3:16-17;2कुरि 5:16;इफिसियों 2:21-22; 1पतरस 2:4-5)।

(4) यहूदी परिपूर्णता को देखने में असफल रहे।

यहूदियों ने केवल पत्थरों से बना हुआ मन्दिर ही देखा,जिसे बनने में 46 वर्षों का समय लगा था। यदि उन्होंने विश्वास करने वाले हृदय के साथ कलाम को पढ़ा होता तो वे निम्नलिखित बातों को अवश्य जानते:

- परमेश्वर ने सुलेमान को पहले ही चेतावनी दे दी थी कि "यह मन्दिर" परमेश्वर की निगाहों से उतार दिया जाएगा।"(1राजा 9:7)
- पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद में भजन सहिंता 40:6-7(इब्रानियों 10:5-7) में लिखा है कि,"मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता, पर तू ने मेरे लिए एक देह को तैयार किया है। होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा। तब मैंने कहा,"मैं यहाँ हूँ, मैं आ गया हूँ....मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ।" यीशु मसीह के प्रायश्चित के बलिदान ने (क्रूस पर चढ़ाई उसकी देह ने)पुराने नियम के सारे बलिदानों को प्रतिस्थापित कर दिया।
- यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भी भविष्यद्वाणी की कि मन्दिर परमेश्वर का घर नहीं हो सकता था। (यशायाह 66:1-2)
- यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने यह भविष्यद्वाणी की कि उसका विचार भी उनके मन में न आयेगा,न लोग उसकी चिन्ता करेगें और न ही उसके स्थान पर दूसरा सन्दूक बनाया भी नहीं जाएगा। (यिर्मयाह 3:16)।
- यीशु ने भविष्यद्वाणी में कहा, एक पत्थर पर पत्थर बचा न रह जाएगा(उस मन्दिर की इमारत के बारे में)। हर एक पत्थर ढा दिया जाएगा।(मत्ती 24:1-2; लूका 19:44;लूका 21:6)।
- इब्रानियों को लेखक सिखाता है,"पवित्र स्थान स्वर्ग में की वस्तुओं का प्रतिरूप है(एक दृष्टान्त के समान है)(इब्रानियों8:5; इब्रा 9:23)। परमेश्वर द्वारा ठहराए गये पवित्र स्थान में यीशु मसीह महायाजक की सेवा निभाता है(इब्रानियों 8:1-2)।

(5) यीशु के चेले यह समझने में असफल रहे कि जिस मन्दिर की वह बात कर रहा था वह मन्दिर परन्तु उसकी देह थी।

केवल यीशु के मरने के बाद,जब मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट जाने के बाद और उसके तीसरे दिन मृतको में से जीव उठने के बाद, चेलों की यीशु द्वारा कही गयी बातों का आत्मिक अर्थ समझ में आया।

2:19

प्रश्न 4. बाइबल के किस अन्य उदाहरण में शारीरिक चीजों को आत्मिक चीजों का प्रतीक बनाया गया है?

नोट्स।

यहूदी लोग यह नहीं समझ पाये कि व्यवहारिक चीजें आत्मिक बातों का प्रतीक हो सकती है। बार बार उन्होंने यीशु की बातों का मज़ाक बनाया, जिनका अपना अलग आत्मिक अर्थ था। निम्नलिखित उदाहरण केवल यूहन्ना की पुस्तक से लिए गये हैं।

- यूहन्ना 3:3-8 में "नया जन्म पाने " या "स्वर्ग की ओर से जन्म लेने " का अपना आत्मिक मतलब था। नीकूदुमुस यीशु की बातों का एक शाब्दिक अर्थ समझता है(अर्थात नया जन्म पाने के लिए अपनी माता के पेट में दोबारा घुसना।)
- यूहन्ना 4:10-15 में, यीशु द्वारा दिया गया जीवन का जल, पवित्र आत्मा के प्रति संकेत है। सामरी स्त्री ने उसका शाब्दिक अर्थ निकाला(कुंआ तो बहुत गहरा है)।
- यूहन्ना 6:48-58 में "यीशु के बदन का खाया जाने का अर्थ विश्वास द्वारा यीशु को ग्रहण करना है। यहूदियों ने इसका शाब्दिक अर्थ नरभक्षी बताया।
- यूहन्ना 8:21-22 में" उस स्थान पर जाना यहूदी नहीं आ सके" अर्थात उसका स्वर्गारोहण। लेकिन यहूदियों ने इसका शाब्दिक अर्थ निकाला किय यीशु आत्म हत्या कर लेगा।

कदम 4. लागूकरण। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें और लिखें। आईये हम आपस में सोच विचार करके यूहन्ना 2:1-25 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। कस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें। (याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 2:1-25 से सम्भव अनुप्रयोगों की सूची।

2:1 विवाह को परमेश्वर का विचार व अनुसंधान जानकर उसका आदर करें।
2:1 एक मसीही होने के नाते गैर मसीहियों के साथ सामान्य गतिविधियों मे शामिल हो जाएं।
2:11 पुराने नियम व नये नियम में प्रदर्शित की गयी मसीह की महिमा पर मनन करें।
2:12 कुछ समय अपने परिवार व अभिभावकों के साथ गुज़ारें।
2:15-16 अधार्मिकता को देखकर क्रोध तो करो,परन्तु पाप न करो(इफिसियों 4:26)
2:22.पुराने व नये नियम में विश्वास करो। यीशु मसीह के वचनों पर विश्वास करें।
2:23. हर एक जन पर भरोसा न करें। लोगों के मन को परखना सीखें।
2:25 मसीह की उपस्थिति में रहने का अभ्यास करें। वह सब कुछ देखता और जानता है।

2. यूहन्ना 2:1-25 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं पुराने और नये नियम में मसीह की महिता की खोज करना चाहता हूँ। इसलिए जब भी कभी मैं बाइबल में एक कोई अनुच्छेद पढ़ता या उस पर अध्ययन करता हूँ, मैं अपने आप से प्रश्न पूछूंगा: "इस अनुच्छेद से मैं यीशु मसीह के बारे में और क्या सीख सकता हूँ?"

आज,मैंने सीखा कि यीशु मसीह की मृत्यु ने पुराने नियम के मन्दिर व उसकी आनुष्ठानिक रीतियों पर पूर्ण विराम लगा दिया। और मैंने यह भी सीखा कि यीशु मसीह के पुनरूत्थान ने एक नये मन्दिर का निर्माण किया, जो विश्वासियों से मिलकर बना है जिनमें पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर वास करता है (इफिसियों 2:22; 1पतरस 2:4-11) और जहां पर लोग परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई में होकर करते हैं।

मैं चाहता हूँ कि मेरा विश्वास और मेरी आराधना आत्माओं को बचाने के अनुकूल हो। पुराने नियम में मन्दिर में अन्यजातियों के लिए भी एक आंगन था ताकि उन्हें भी जीवते परमेश्वर को जानने और उसकी आराधना करने का अवसर मिल सके। हालांकि हनन्याह के समान यहूदी अगुवों और यहूदी व्यापारियों ने उस मन्दिर के आंगन को बाजार बना दिया जहां पर मशेवी,भेड़े बेची जाने लगी और वहां की मुद्रा में विदेशी मुद्रा को बदलने के नाम पर लोगों को लूट कर उस स्थान को डाँकुओं की खोह बना दिया गया। जिस स्थान को परमेश्वर न अन्यजातियों के लिए एक आशीष का स्रोत बनाया था उसे ही यहूदियों ने अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना प्रारम्भ कर दिया। अत: इस तरह से यहूदियों ने इस बात को जाहिर किया कि वे खोये हुओं और अन्यजातियों को बचाने के बिल्कुल विरोध में थे। वे अपने विश्वास को केवल अपने तक ही सीमित रखना चाहते थे। यीशु मसीह अर्थात मूल मसीह आया और उसने इन सब बातों के प्रति चुनौति प्रस्तुत की। वह यहूदी और अन्यजातियों दोनों के लिए आया। उसने सारे विश्वासियों से की हुई प्रतिज्ञा को पूरा किया और उसने संसार के हर भाषा और जाति,गोत्र से विश्वासियों को मिलाकर एक कलीसिया की स्थापना की। मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा कि मैं और मेरी मण्डली अभी तक सुसमाचार से वंचित लोगों के लिए आत्मिक सभाओं के दरवाज़े बन्द करके, कभी भी खोई हुई आत्माओं को बचाने का विरोध न करें।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 2:1-25 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30;कुलुस्सियों 4:12 **)**

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को यूहन्ना 2 के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3.परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **1कुरिन्थियों 13-16** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। नयी बाइबल की आयत, **(3) यूहन्ना 2:25।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5.प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।